ISSN: 0971-8478

सितम्बर 2022

₹ 22

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजकल

1945 से निरंतर प्रकाशित

साहित्य और संस्कृति का मासिक

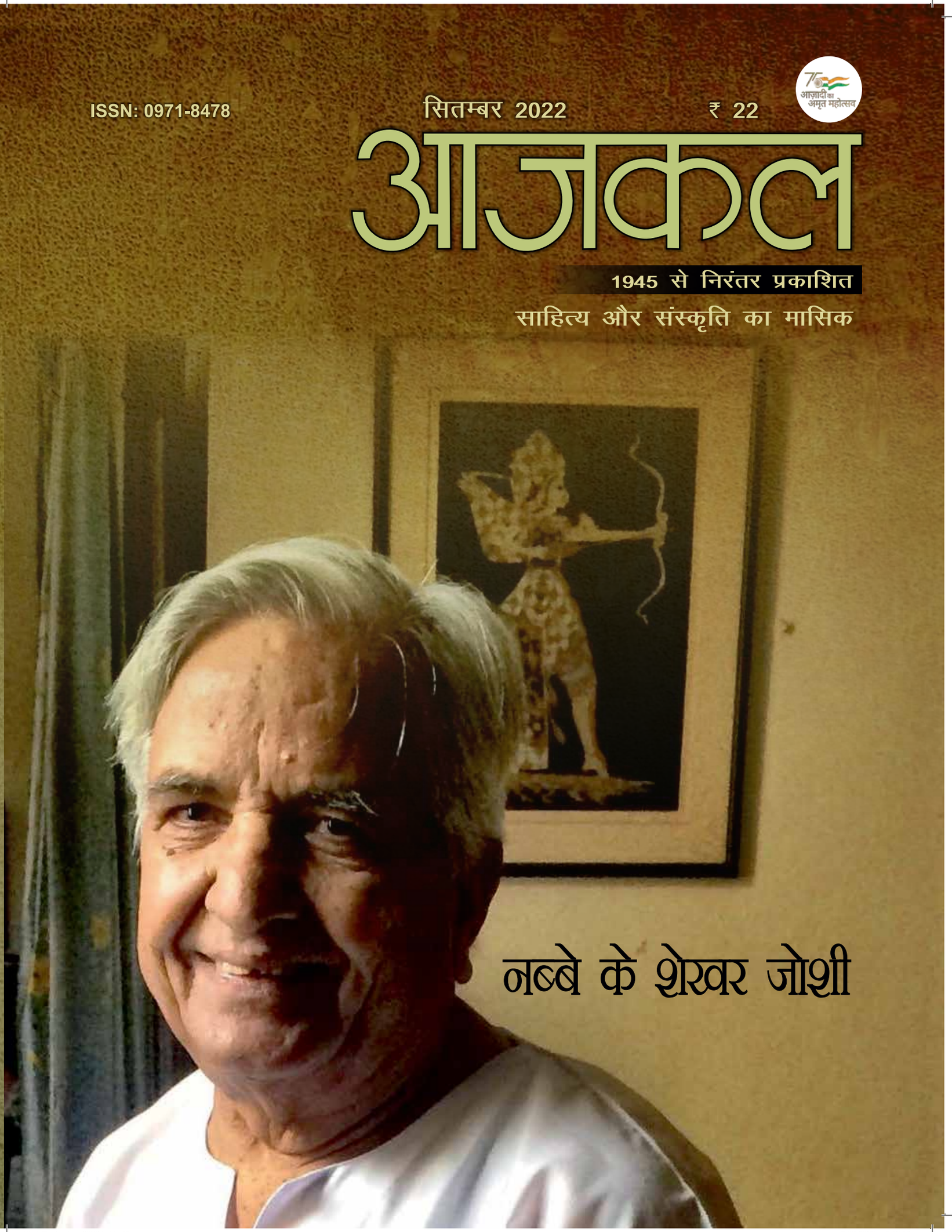

नब्बे के शेखर जोशी

Ajkal_September_2022.indd 57 13-08-2022 15:52:53

इस अंक में

नब्बे के शेखर जोशी

रचनाकार शेखर : **विश्वनाथ त्रिपाठी** 7

हिन्दी के अकेले डाँगरीवाले शेखर जोशी : **नवीन जोशी** 11

श्रमिक जीवन और शेखर जोशी की कहानियाँ : **महेश दर्पण** 17

संस्मरण : जीवन जो लिखते हुए जिया : **वाचस्पति** 23

इन संस्मरणों को पढ़ना अपने भीतर... : **हरियश राय** 25

एक गुलज़ार पड़ोस की ख़ातिर : **सिद्धार्थ शंकर राय** 28

कहानी : आशीर्वचन : **शेखर जोशी** 31

लम्बी कविता : **शेखर जोशी** 36

स्मरण

मुक्तिबोध के सृजन की..... : **हितेश कुमार सिंह** 40

जन्मदिवस पर विशेष

श्यामनन्दन किशोर : प्रेम के उदात्त भावों को शब्द देने वाले कवि : **शिवदयाल** 42

उपेन्द्र कुमार की कविताई : **देवशंकर नवीन** 45

कविताएँ

चार कविताएँ : **कैलाश मनहर** 38

दो कविताएँ : **अनिल विभाकर** 39

कविता : **अमिता सिंह** 49

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गाँधीजी और स्वतन्त्रता : **विलियम स्टुअर्ट नेल्सन** 48

मूल्यांकन

समकालीन आलोचनात्मक दृष्टि : **मीना बुद्धिराजा** 50

इत्मीनान के आनन्द से भरी एक किताब : **मेधा** 52

पुस्तक परिचय

पर्यावरण और विकास : **शुभ्रा सिंह** 54

ISSN-0971-8478

आजकल स्थापित 1945

वर्ष : 78, अंक : 5
पूर्णांक : 932
सितम्बर, 2022
भाद्रपद–आश्विन 1944

प्रधान सम्पादक
राकेशरेणु

सम्पादक
फरहत परवीन

सम्पादन सहयोग
शुभ्रा सिंह

प्रथम आवरण चित्र : **अमिताभ पन्त**
आवरण सज्जा : **बिन्दु वर्मा**

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार
सम्पादक
आजकल
प्रकाशन विभाग
कमरा नं. 601डी, सूचना भवन
सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003
दूरभाष : 011-24362915
ई.मेल : ajkalhindi@gmail.com
website : www.publicationsdivision.nic.in
फेसबुक www.facebook.com/publicationsdivision
ट्विटर : @DPD_India
इंस्टाग्राम : @dpd_india

संयुक्त निदेशक (उत्पादन)
डी.के.सी. हृदयनाथ

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : 434 रुपये
दो वर्ष : 838 रुपये
तीन वर्ष : 1222 रुपये
(रजिस्टर्ड डाक से)

पृष्ठ 56

पत्रिका न मिलने की शिकायत अथवा **आजकल** की सदस्यता लेने या पुराने अंक मँगाने के लिए pdjucir@gmail.com पर ईमेल करें या संपर्क करें-
दूरभाष : 011-24367453

सदस्यता सम्बन्धी पत्राचार का पता
अभिषेक चतुर्वेदी, सम्पादक (प्रसार), पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कमरा नं. 779, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारे विक्रय केन्द्र : **नई दिल्ली:** सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, दूरभाष : 011-24367260, **लखनऊ** : हॉल नं. 1, दूसरी मंजिल, केंद्रीय भवन, अलीगंज, दूरभाष : 0522-2225455, **कोलकाता** : 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, दूरभाष : 33-22488030, **पटना** : बिहार रा. सह. बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, दूरभाष : 0612-2683407, **मुम्बई** : 701 बी-विंग, सातवीं मंज़िल, केंद्रीय सदन बेलापुर, नवीं मुम्बई, दूरभाष : 9522-27570686, **बंगलुरू** : एफ विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला दूरभाष : 080-25537244, **अहमदाबाद** : 4-सी, नेपच्यून टॉवर (एच.पी. पेट्रोल पंप के निकट), नेहरू ब्रिज कॉर्नर, आश्रम रोड, दूरभाष : 079-26588669, **हैदराबाद** : कमरा नं. 204, द्वितीय तल, सी.जी.ओ. टॉवर्स, कावादिगुडा-500080, **चेन्नई** : राजाजी भवन, एनी बेसैन्ट नगर, दूरभाष : 044-24917673, **तिरुअनंतपुरम** : गवर्मेंट प्रेस के निकट, दूरभाष : 041-2330650

Ajkal_September_2022.indd 3 13-08-2022 15:52:42

● मूल्यांकन-एक

समकालीन आलोचनात्मक दृष्टि

मीना बुद्धिराजा

आलोचना का काम साहित्य के इतिहास और कृतियों-रचनाकारों को केवल अपने समाज ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक समय, युग और काल की पूरी समग्रता के सन्दर्भ में देखना है क्योंकि साहित्य जीवन की इतिवृत्त मात्र नहीं है बल्कि जीवन और सौन्दर्य की व्याख्या का नाम है। रचनाकार और उसकी रचना में अंतर्निहित दो दुनियाओं का गहरा द्वन्द्व मूलभूत रूप से चलता रहता है। आलोचना इन परस्पर-विरोधी अवधारणाओं को पकड़ने की कोशिश करके उनमें सामंजस्य की खोज करती है। उस काल के तमाम सामाजिक-राजनैतिक आशयों के साथ समग्रता के स्वर में उसका पुनर्पाठ और नए विमर्श को केन्द्र में लाती है, जिसका मूल्यांकन उस परिवेश के द्वन्द्व और आंतरिक संघर्ष के साथ रचना के मूल सम्बन्ध को रेखांकित करता है। साहित्य का इतिहास कोई मृणाट यथार्थ नहीं है बल्कि उसके विमर्श, विचार और सम्वेदना का स्वरूप समय के साथ-साथ काल के नए बोध में परिवर्तित होता रहता है। यह पुनर्विचार साहित्य के भाषापाठ की ही भाँति है जो भरतमुनि से लेकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और मुक्तिबोध की आलोचना पद्धतियों तक चला आता है। आदि से अंत तक जनता की चित्तवृत्तियों के संचित प्रतिबिम्ब की परम्परा को परखते हुए समकालीनता के सन्दर्भ में उनकी प्रासंगिकता का सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।

आलोचक माधव हाड़ा समकालीन गम्भीर आलोचना के परिदृश्य में निरन्तर सक्रिय हस्ताक्षर हैं जिनके अनेक शोध लेख तथा चिन्तनपरक आलोचनात्मक निबन्ध साहित्य, मीडिया, संस्कृति, समाज, दर्शन और इतिहास जैसे विषयों पर प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी मौलिक और सम्पादित अनेक पुस्तकें भक्तिकाल की बड़ी कवयित्री मीरा के काव्य, आधुनिक कथेतर गद्य और कविता के साथ ही कथा साहित्य के विविध आयामों को उद्घाटित करती हैं। उनकी रचना-प्रक्रिया की इस यात्रा में नई आलोचना पुस्तक 'देहरी पर दीपक' हिन्दी साहित्य के इतिहास के ज़रूरी प्रस्थान बिन्दुओं को, पड़ावों-अध्यायों को, अकादमिक विमर्शों के केन्द्रीय प्रश्नों को रेखांकित करते हुए समकालीन आलोचना की ठोस वैचारिक ज़मीन के आधार पर पुनर्विश्लेषित करते हुए बहुत-से पूर्वाग्रहों का निराकरण करती है और उस विषय, काल, रचना-रचनाकार से जुड़े युगबोध की स्पष्ट, प्रामाणिक और सार्थक उपस्थिति दर्ज करती है। आलोचकीय विवेक और निष्पक्षता को बनाए रखते हुए यह पुस्तक हिन्दी साहित्य के एक विराट और समृद्ध इतिहास की समग्र परम्परा का नया मूल्यांकन करती है और हिन्दी के गम्भीर पाठकों, अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए पठनीय और उपयोगी पथ-प्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

इस पुस्तक में संकलित लेखों को मूल विषय सामग्री और काल विभाजन की दृष्टि से तीन खंडों में बाँटा जा सकता है– संस्कृति, परम्परा और भाषाओं के इतिहास से सम्बन्धित लेख, मध्यकालीन कृष्ण-भक्ति काव्य और भक्ति आंदोलन की पहचान और उसके व्यापक प्रभाव से सम्बन्धित लेख और छायावाद तथा आधुनिक काल की मुख्य प्रवृत्तियों एवं रचनाओं से सम्बन्धित लेख। 'देहरी पर दीपक' शीर्षक प्रतीक के रूप में इस पुस्तक में परम्परा और आधुनिकता के मध्य सम्बन्ध और सम्वाद के आलोकपुंज का काम करता है और दोनों के समन्वय से नया दृष्टिकोण स्थापित करता है।

पहला लेख 'अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की भारतीय संस्कृति और परम्परा' सांस्कृतिक चेतना की विविधता में एकता के उद्देश्य से सृजित गम्भीर लेख है जो इस मूल तत्त्व के सार्वकालिक और समकालीन सत्य को नए सिरे से प्रमाणित करता है–"सदियों के सहजीवन के अभ्यास और संस्कार के कारण भारतीय समाज के विभिन्न सांस्कृतिक समूहों में एक-दूसरे के अस्तित्व की स्वीकृति और सम्मान भाव है और इसलिए ये एक-दूसरे को अभिव्यक्ति की छूट देते हैं और इस कारण यहाँ अभिव्यक्तियाँ प्रायः बहुवचन हैं। भारत में शैव, शाक्त, वैष्णव, जैन, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, सिक्ख आदि कई सांस्कृतिक-धार्मिक समूह हैं। इनमें से कुछ यहीं बने-बिगड़े और कुछ बाहर से आए, लेकिन मामूली प्रतिरोध-संघर्ष के बाद उन्होंने एक-दूसरे के साथ रहना सीख लिया। इनके साथ रहने का सबसे बड़ा आधार एक-दूसरे की विद्यमानता की स्वीकृति है।" आलोचक परम्परा से बहुत कुछ लेता है–भाषा, ज्ञान, स्मृति, लोकतत्त्व, ऐतिहासिक चेतना, क्योंकि वह जानता है आज जो परम्परा है, वह अतीत की आधुनिक चेतना का ही विकसित रूप रही है और उस परम्परा में भी नई खोज एक गतिमान

सम्पर्क : मो. 9873806557, ई-मेल : meenabudhiraja67@gmail.com

Ajkal_September_2022.indd 50 13-08-2022 15:52:48

प्रक्रिया और चेतना का प्रवाह बनकर वर्तमान काल तक आई है।

दूसरा लेख भाषा में 'भाषा : भारतीय भाषाओं के वैविध्य का यथार्थ' व्यापक भाषाई विविधता के बावजूद हिन्दी के उत्थान में अन्य भाषाओं-बोलियों के योगदान और उनके अंतर्सम्बन्ध को रेखांकित करता है कि भाषा परस्पर-विरोधी विचारों और दृष्टियों के संघर्ष के साथ भी हमेशा एक अतिरेकहीन और समावेशी संस्कृति को लेकर चलती है। इसी सन्दर्भ में 'विस्मृत मनीषी मुनि जिनविजय' शीर्षक लेख हिन्दी भाषा के विकास में उनके अथक कार्य का आकलन और मूल्यांकन करता है जिनके द्वारा अनेक ग्रन्थों के सम्पादन और पाठालोचन से हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास को समझने और शोध में असाधारण योगदान दिया जिनमें 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण', 'वृहत्कथाकोश', 'संदेशरासक' जैसी प्रसिद्ध रचनाओं की भूमिका असंदिग्ध है।

'मीरा की कविता का पाठ' लेख मीरा की कविता की मूल और हस्तलिखित रचनाओं तथा जनश्रुति और लोक में प्रचलित पदों के तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर पड़ताल करने का प्रयास है क्योंकि मीरा की लोकव्याप्ति मध्यकालीन सन्त-भक्त कवियों में सबसे अधिक है और राजस्थानी, गुजराती, ब्रजभाषा में उनके काव्यात्मक पदों के विविध रूप प्रचलित हैं। कृष्ण भक्ति काव्य के सुप्रसिद्ध कवि सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बहुत लगाव से लिखते हुए 'सूरसागर' के भ्रमरगीत प्रसंग का पुनः पाठ प्रस्तुत करता सुन्दर लेख 'कोकिल कूजत कानन' अप्रतिम है, जिसका संकलन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी स्वतन्त्र पुस्तक 'भ्रमरगीत सार' में किया। शृंगार और वात्सल्य के साथ ही सगुण और निर्गुण के द्वन्द्व का गहरा और तीखा बोध इस रचना का आधार है जिसकी खोज उस समय और युग के अनुसार सूरदास की कविता में विस्तार से की गई है। 'लोक का साँवरा सेठ' शीर्षक लेख भगवान श्रीकृष्ण के विविध रूपों में से एक लोक स्मृतियों द्वारा रचित उनके मानवीय रूप को एक रोचक, मार्मिक कथा के रूप में पुनर्व्याख्यायित करता है जो उनके भक्त नरसी मेहता के जीवन के सम्मान को बचाने से जुड़ी है। भक्ति आंदोलन की पहचान पर पुनर्विचार करते हुए 'अतिव्याप्ति में अलक्ष्य' लेख इसके व्यापक भौगोलिक विस्तार के साथ ही इसकी उपलब्धियों, सीमाओं, कवियों की विविधता के साथ ही सामाजिक-सांस्कृतिक भिन्नता के बीच संश्लिष्टता की पहचान की खोज करता है।

आधुनिक काल के इतिहास में गद्य का जो विकास हुआ उसकी सबसे नई और समकालीन विधा के रूप में कथेतर सर्वाधिक लोकप्रिय रूप है जिसमें जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण और यात्रा वृत्तान्त अपनी संरचना शैली में एक-दूसरे में जिस प्रकार आवाजाही कर रहे हैं उसका परिचय देते हुए 'हिन्दी में कथेतर' नए परिदृश्य में लिखा गया लेख है तो वहीं हिन्दी नाटक और रंगमंच के इतिहास में अपना सशक्त स्थान रखने वाला नाटक 'तुग़लक : मोहभंग का रूपक' शीर्षक लेख प्रसिद्ध नाटककार-रंगकर्मी गिरीश कर्नाड द्वारा लिखित इस ख्यातिलब्ध नाटक के मूल द्वन्द्व और रंगमंचीय चुनौतियों को पूरा करने में सर्वाधिक सफल होने के कारणों का सार्थक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक हिन्दी कविता के सबसे ज़रूरी कवि मुक्तिबोध की लम्बी और जटिल कविता 'ब्रह्मराक्षस' के भीतर गतिमान तत्त्व और फ़ैंटेसी के साथ उसके गहन-बौद्धिक पारस्परिक द्वन्द्व को मुक्तिबोध की ज्ञानात्मक सम्वेदना की अपेक्षाओं के अनुरूप आलोचक माधव हाड़ा की सूक्ष्म दृष्टि जिस प्रकार हृदयंगम करती है वह इस प्रसिद्ध कविता के समानांतर 'आत्मसंघर्ष और असफलता' शीर्षक लेख में अपनी पूरी जीवन्तता के साथ पाठक के सामने प्रस्तुत हो उठती है। अंतिम लेख 'सौ साल बाद छायावाद' आधुनिक हिन्दी कविता के इस स्वर्णिम काल का जिन दृष्टियों के आधार पर मूल्यांकन किया गया, उसकी उपलब्धियों के साथ ही छायावाद के आंदोलन के अंतर्विरोधों की ओर भी संकेत करता है लेकिन स्वच्छन्दतावादी शैली, मुक्त छन्द और भाषा के सौन्दर्य में हिन्दी कविता के शिखर छायावाद को एक सदी के बाद पुनः स्मरण करना बहुत प्रासंगिक है।

समग्र रूप में कहा जा सकता है कि आलोचक जब रचना की कलात्मकता, लेखक के सरोकारों और जीवन के साथ उसके अंतर्सम्बन्धों की परख कर रहा होता है तो उसमें नया अनुभव पुराने को मिटाता नहीं है बल्कि उसमें जुड़कर उसे नयी परिपक्वता देता है। इससे परम्परा और आधुनिकता के बीच की तारतम्यता कृति के सम्प्रेषण व अभिव्यक्ति के बीच के अंतराल को पूरा करने का काम करती है। 'देहरी पर दीपक' पुस्तक इसी संतुलित और विवेकपूर्ण आलोचकीय दृष्टि का उदाहरण है जो काल के इतिहासबोध के साथ विषयवस्तु, यथार्थ और अभिव्यक्ति के बदलते प्रतिमान और परिदृश्य में देहरी-दीपक न्याय के अनुसार अंदर से बाहर और बाहर से अंदर के उजाले के विस्तार में छुपे हुए अर्थों के साथ उसमें निहित नयी सम्भावनाओं को समसामयिक दृष्टि से देखने का सार्थक प्रयास करती है। अपने समय, समाज और साहित्य से सम्वाद करती इस पुस्तक में विरोधों का सामंजस्य है और विषयों, सन्दर्भों तथा प्रसंगों की विविधता के बीच परम्परा, संस्कृति, मानवीय चेतना के दृश्यों की वे संगतियाँ हैं, जिससे इस विविधता की आंतरिकता और एकान्विति निर्मित होती है और यही इस पुस्तक की आलोचना दृष्टि का मूल आधार है। ❑

(कृति : 'देहरी पर दीपक' ; लेखक : माधव हाड़ा ; प्रकाशक : सेतु प्रकाशन, सी-21, सी ब्लॉक, सेक्टर-65, नोएडा (उ.प्र.); मूल्य : 249 रुपये ; पृष्ठ : 216)

पत्र...

पृष्ठ 5 से आगे...

महत्वपूर्ण आलेख

जुलाई, 2022 अंक को देखकर सुकून मिला, क्योंकि इस अंक में चन्द्रकिशोर जायसवाल पर लेखकों के महत्वपूर्ण आलेख हैं।

चन्द्रकिशोर जायसवाल चेहरे से उम्रदराज़ व सौम्य दीखते हैं ऊपर से मितभाषी, भीतर से बड़े संन्यासी, भाव-भाषा पर दृढ़ पकड़, उतने बड़े तीरंदाज़, भीष्म पितामह जैसे सधे, निःस्पृह, दम-ख़म और विचार ऊर्जा से सम्पन्न छह दशक से कथा जगत में अपनी स्थापना कर लेने वाले पाठकों के बीच उस समय से आजतक चर्चित रहे हैं। जब-जब उन्हें भूलने, भुलाने की कोशिश हुई है, तब-तब उन्हें शिद्दत से याद किए जाने की आवश्यकता महसूस हुई है और आवाज़ बुलन्द की गई है। यह एक मौन साधक की तपस्या की ताक़त है, पहचान है।

-कपिलदेव कल्याणी, पूर्णिया

'नकबेसर कागा ले भागा' प्रकाशित करें

जुलाई, 2022 अंक में चन्द्रकिशोर जायसवाल पर सामग्री पढ़ने को मिली। कृपया आप उनकी कहानी 'नकबेसर कागा ले भागा' को प्रकाशित करने का प्रयास करें, जिससे जिन लोगों ने उस कहानी को नहीं पढ़ा है, वे भी पढ़ सकें। मेरी भी इच्छा है उसे पुनः पढ़ने की।

-केदारनाथ सविता, लालडिगी, सिंहगढ़ की गली, मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश)

Ajkal_September_2022.indd 51 13-08-2022 15:52:48